इन्द्र जिमि जम्भ पर, बाडव सुअम्भ पर,
रावन सदम्भ पर रघुकुल-राज है।
पौन बारिबाह पर, सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाह पर राम-द्विजराज है॥

दावा द्रुम दण्ड पर, चीता मृग-झुण्ड पर,
'भूषन' बितुण्ड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है॥५६॥

शब्दार्थ—अम्भ = (सं० अंभस्) जल, यहाँ समुद्र से तात्पर्य है। दंभ = घमंडी। रघुकुलराज = रामचन्द्र। बारिवाह = (वारि + वाह) जल वहन करने वाला, बादल। रतिनाह = रति के स्वामी, कामदेव। रामद्विजराज = परशुराम। दावा = वन की अग्नि। द्रुमदण्ड = वृक्ष की शाखाएँ। बितुण्ड = हाथी। तम अंस = अंधकार का समूह

अर्थ—जिस प्रकार इन्द्र ने जम्भ राक्षस को, श्रीराम ने घमंडी रावण को, महादेव जी ने रतिनाथ (कामदेव) को, परशुराम ने सहस्रबाहु को और श्रीकृष्ण ने कंस को नष्ट किया* और जैसे बाड़व (बड़वानल) समुद्र को, पवन बादलों को, दावाग्नि (जङ्गल की आग) वृक्षों की शाखाओं को, चीता हिरणों के झुंडों को, सिंह हाथियों को और सूर्य का तेज अंधकार समूह को नष्ट कर देता है उसी प्रकार शिवाजी मुसलमान वंश का नाश करने वाले हैं।

विवरण—यहाँ शिवाजी 'उपमेय' के इन्द्र, राम, महादेव, कृष्ण, बड़वानल आदि अनेक उपमान कथन किये गये हैं।

———

* जम्भ नामक राक्षस महिषासुर का पिता था। इसे इन्द्र ने मारा था। समाधिस्थ महादेव ने अपने तीसरे नेत्र द्वारा समाधि भंग करने के लिए आये हुए कामदेव को भस्म कर दिया था, यह प्रसिद्ध है। सहस्रबाहु (कार्तवीर्य) एक बड़ा पराक्रमी राजा था। इसकी एक सहस्र भुजाएँ थीं। इसने परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि का सिर काटा था। इस पर क्रुद्ध हो परशुराम ने इसे मार डाला था।